प्रार्थना

जय सीतापति, जय जगपति
जय मायापति जगदीश्वर।
जय गिरिजापति, जय काशीपति,
अविनाशी विश्वम्भर॥
जय राधावर जय मुरलीधर,
जय नटनागर वंशीधर।
जय गिरिधरता, सब दुःखहरता,
श्रीकृष्ण सर्वेश्वर ॥ (जय)
जय कौशलपति अवधेश हरे,
जय लक्ष्मीपति अखिलेश हरे।
जय भक्तों के प्रभु प्राण हरे,
जय संतों के कल्याण हरे॥
श्रीरमापति श्रीगोकुलपति,
करिये दया हम सब पर ॥ (जय)

रामतीर्थ-गीतावली

श्रीमद् परमहंस स्वामी रामतीर्थजी

महाराज का सूक्ष्म

जीवन-चरित्र

पद्य में

लेखक

डॉ० लक्ष्मीनारायण मैड़, होम्योपैथ

प्रकाशक

बैजनाथ हलवाई

सदर बाज़ार, लखनऊ

प्रथमावृत्ति १००० | ऑक्टोबर, सन् १९३४ ई० | मूल्य =)

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

भूमिका

एक दिन मैं श्रीमन्नारायण स्वामीजी द्वारा संशोधित 'बृहद् राम-जीवनी' पढ़ रहा था। उसके पढ़ते ही मेरे हृदय में यह भाव उठा कि यदि इस पुस्तक का सारांश पद्य में हो जावे तो माता-बहनें व बच्चे-बूढ़े सभी को इससे बड़ा लाभ पहुँच जावे। और प्रत्येक व्यक्ति परमहंस स्वामी रामतीर्थजी के जीवन-चरित्र से शिक्षा ग्रहण कर सके। अस्तुः।

मैंने इसी विचार से पद्य में यह पुस्तक लिखी है, और यदि इससे जनता को कुछ भी लाभ पहुँचा, तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा।

यह पुस्तक श्रीमन्नारायण स्वामीजी महाराज की कृपा और शिक्षा का फल है, अतः मैं इसे उन्हीं के कर-कमलों में समर्पण करता हूँ।

इस पुस्तक के प्रकाशन में मेरे मित्र लाला वैजनाथजी ने मुझे भारी सहायता दी है, अतः मैं उनका चिर आभारी हूँ।

लखनऊ
ऑक्टोबर, सन् १९३४

निवेदक—
लक्ष्मीनारायण वैद्य

श्रीगणेशाय नमः

श्री सरस्वती को सुमर, सादर शीस नवाय।
विरचित रामचरित्र को, सर्व जनन हित लाय॥
पंजाब प्रान्तविख्यात है, भारत के दरम्यान।
गुजराँवाला ज़िला है, सज्जन! करूँ बयान॥
था गाँव मुरालीवाला वह, जो सब गाँवों में आला था।
पंडित हीरानंद जहाँ, गोसाइँ वंश का लाला था॥
यह वंश पुराना प्रचलित है, इसने बहु नाम कमाए हैं।
तुलसीदास जैसे लेखक भी, इसी वंश में जाए हैं॥
दोहा—कार्त्तिक शुक्ला प्रतिपदा, सम्वत् उन्निस सौ तीस।
बुद्धवार उस ग्राम में, जन्में राम नर-ईश॥
गोसाइँ तीर्थरामजीका, बाइस अक्टूबर को जन्म हुआ।
सन् अट्ठारह सौ तिहत्तर था, जब भारत को आनंद हुआ॥
गोसाइँ हीरानंद आज, मन फूले नहीं समाते हैं।
जो याचक घर पर आता है, मुँह माँगा दान दिलाते हैं॥
फिर धीरे-धीरे रामजी के नामकरण का दिन आया।
एक वृद्ध वहाँ पर पंडित थे, उन आकर ऐसे बतलाया॥
यह पुत्र भाग्यशाली तेरा, हम हीरानंद बताते हैं।
भारत को यह देगा प्रकाश, यह हम तुमको समझाते हैं॥
विद्या-अभ्यासी होकर यह, अन्य देशों को जाएगा।
तेरे कुल का और भारत का, मस्तक ऊँचा कर अएगा॥

दोहा—आख़िर को संन्यास ले, करे देश उद्धार।
जल से मृत्यु होयगी, कहूँ पुकार-पुकार॥
इस प्रकार महराज ने सब गुण दिए बताय।
रामतीर्थ रख नाम को, गए भवन हर्षाय॥

वार्ता—श्रीरामतीर्थजी का जन्म और नामकरण इस प्रकार हुआ, और आप बड़े लाड़चाव से पलते रहे। यहाँ तक कि दो वर्ष की आयु में ही आपकी सगाई भी हो गई। जब आप कुछ बड़े हुए, तो एक दिन आपके पिता हीरानंदजी आपको एक मंदिर में श्रीकृष्णजी की कथा सुनने के लिये अपने साथ ले गए।

उस गाँव मुरालीवाला में, एक मंदिर सबसे आला था।
होता था कृष्ण-चरित्र वहाँ, जो सब सुख देनेवाला था॥
उस जगह पर कथा सुनने को, बहुतेरे श्रोता आते थे।
रामतीर्थ को साथ लिए, वहाँ हीरानंद भी जाते थे॥
बचपन से ही कृष्ण-भक्त, श्री तीथरामजी ऐसे थे।
चुपचाप कथा सुनते रहते, नहीं कभी वहाँ पर रोते थे॥
जो बात वहाँ पर सुनते थे, वह उसे कंठ कर लेते थे।
फिर घर आकर बुआजी से, उत्तर प्रत्युत्तर करते थे॥

दोहा—अभाग्यवश कम वय में, हुआ था वज्र-प्रहार।
माताजी संयोग-वश, गईं परलोक सिधार॥

वार्ता—श्री तीर्थरामजी की नौ मास की ही आयु में माताजी का देहान्त हो गया था, जिसके कारण उनकी बुआ ने उन्हें पाला था। जब आप कुछ बड़े हुये, तो आपके पिता हीरानंदजी ने आपको गाँव के प्राइमरी स्कूल में पढ़ने के लिये बैठा दिया।

दोहा—विद्यालय में राम का, हुआ प्रवेश इस तौर।
तभी हृदय की धारणा, हुई और की और॥

पढ़ने में ऐसे तेज़ हुए, बिन समझाये पढ़ जाते थे।
जितने सहपाठी थे इनके, वह पीछे ही रह जाते थे॥
थोड़े ही समय में रामजी ने, प्राइमरी कोर्स समाप्त किया।
गुलिस्ताँ, बोस्ताँ, को पढ़कर, विद्यालय में यश प्राप्त किया॥
मोलवी मुहम्मद अली साहब, जो उस समय में इनके शिक्षक थे।
एक भैंस भेंट देकर उनको, यह गुरु-पूजा के इच्छुक थे॥
वाह वाह हे वीर हृदय, बालकपन जिसका ऐसा हो।
यह कौन, निश्चय कर सकता है, आगे चलकर वह कैसा हो॥

दोहा—बचपन से ही हृदय में, था गुरु का सतकार।
इसी सबब से कर दिया, भारत का उद्धार॥

हे नवयुवकों सोचो तो सही, क्या तुम भी गुरु-भक्त कहाते हो।
हमने देखा, जिन से पढ़ते, उनकी ही हँसी उड़ाते हो॥
करते अपमान हो वृद्धों का, और मन में नहीं शरमाते हो।
गोया तुम डंका पीट-पीट, आपत्तियाँ आप बुलाते हो॥
इस प्रकार प्रारम्भिक शिक्षा में, जब तीर्थराम उत्तीर्ण हुए।
तो हाईस्कूल में पढ़ने को, गोसाईंजी परिपूर्ण हुए॥

दोहा—संयोग-वश वहाँ पर गया समय वह आय।
गोसाईं हीरानंद ने दीन्हा ब्याह रचाय॥
दस वर्ष की आयु में, हुआ ब्याह-संस्कार।
जिसके कारण राम को, पहुँचा क्लेश अपार॥

वार्ता—परंतु इस कार्य की तीर्थरामजी ने तनिक भी परवाह न की, और अपने ज़िले गुजरानवाला के हाईस्कूल में दाख़िल होने को तैयार हो गये। अब आपके पिता हीरानंदजी ने वहाँ (गुजरानवाला में) अकेला छोड़ना उचित न समझकर अपने एक मित्र भगत धन्ना-रामजी की देख-रेख में इन्हें छोड़ दिया।

श्रीधन्नाराम भगतजी थे, सीधे सज्जन सतसंगी थे।
श्रीकृष्णचंद्र के भक्त भी थे, और निज स्वरूप आनंदी थे॥
उन दिनों तीर्थरामजी, जब हाई स्कूल में पढ़ते थे।
तब अवसर पाकर भगतजी, के उपदेशों को वह सुनते थे॥
वह गुरु वाक्य क्या था अमृत था, जिसने राम में जीवन डाला।
राम के ज़रिये से जिसने, सब विश्व के तम को मिटा डाला॥
है धन्य जगत में वही गुरू, जिन ऐसा चेला पाया है।
जिस चेले के कारण जग में, गुरु का सुयश सवाया है॥

दोहा—इस प्रकार उपदेश से हुए राम प्रवीण।
हाईस्कूल की परीक्षा में हुए प्रथम उत्तीर्ण॥

(कवित्त)

गुरु की कृपा से श्रीतीर्थरामजी ने,
सर्वप्रथम और सर्वश्रेष्ठ पद पाया है।
हाईस्कूल की शिक्षा को पास कर,
रामजी के हृदय में हर्ष कुछ समाया है॥
सर्वप्रथम आने से स्कालरशिप के योग्य हुए,
आगे और पढ़ने को हिय हुलसाया है।
परंतु इस हर्ष में विपत्ति एक आय पड़ी,
गोसाईं हीरानंद को अब पढ़ाना नहीं भाया है॥

वार्ता—श्री तीर्थरामजी की यह इच्छा थी कि कालेज में प्रविष्ठ होकर शिक्षा प्राप्त करूँ। मगर गोसाईं हीरानंदजी अब इनको पढ़ाना नहीं चाहते थे, वह यह चाहते थे कि अब यह नौकरी-चाकरी करके धनोपार्जन करें और परिवार का पालन करें। परंतु तीर्थरामजी को यह बात बिलकुल न पसंद थी।

दोहा—हीरानंद और राम की, हुआ इच्छा में भेद।
इस कारण से आपको, हुआ ज़रा-सा खेद॥

गाना—हमारे श्रीरामजी का, हृदय कुछ और कहता था।
सदा से आपके दिल में, प्रेम का स्रोत बहता था॥
यह इच्छा आपकी थी मैं, पढ़ूँ कुछ और कालिज में।
मगर उनके पिताजी को, नहीं यह प्रश्न भाता था॥
वह चाहते थे कमाये धन, यह चाहते थे पढ़ूँ विद्या।
यही था भेद दिल अंदर, अजब यह रँग दिखाता था॥
मगर आखिर हुआ वोही, जो कुछ थी राम की इच्छा।
पहुँच लाहौर कालिज में, नाम दाखिल कराया था॥

दोहा—पिता आपके कह गए, अब हम नहिं धन देयँ।
तीर्थराम ने कह दिया, हम भी नहिं कुछ लेयँ॥

केवल स्कालरशिप पर ही, मैं अपना आश्रय रक्खूँगा।
उस पर ही गुज़ारा कर अपना, पढ़ना मैं जारी रक्खूँगा॥
लाहौर मिशन कालिज में वह, एफ़ ए० क्लास में पढ़ते थे।
जो धन छात्रवृत्ति से मिलता, उस पर ही गुज़ारा करते थे॥
इतने पर भी आपके पिता, नहीं दिल में धीरज धरते थे।
जिस तरह बने, वह पढ़े नहीं, ऐसा वह सोचा करते थे॥

दोहा—किसी तरह जब और कुछ निकला नहीं उपाय।
उनकी पत्नी को गए पिता वहीं पहुँचाय॥
बोले, इसको भी रक्खो अब तुम अपने साथ।
हम अब सह सकते नहीं, इसकी कोई बात॥

इस तरह पिताजी ने उनकी, पत्नी को भी पहुँचाया है।
जिसके कारण रामजी का, दुःख हो गया सवाया है॥
जितना धन उनको मिलता था, वह उनको ही कम पड़ता था।
फिर पत्नी का भी पोषण-भरण, अब उनको करना पड़ता था॥
इतना हो जाने पर भी वह, नहिं मन में ज़रा अधीर हुए।
श्रीकृष्णचंद्र की भक्ती से, एफ़ ए० में प्रथम उत्तीर्ण हुए॥

पर कभी-कभी खर्चे के लिये, जब धन की कमताई पड़ती थी।
तो श्रीराम के घर में बस, एक बार ही रोटी बनती थी॥

दोहा—इस प्रकार पत्नी सहित गए कछुक दिन बीत।
बी० ए० में पढ़ने लगे गोसाईं राम पुनीत॥

वार्ता—एक बार जब रामजी बी० ए० में पढ़ते थे, तो आपने अपनी छात्रवृत्ति के रुपए पुस्तकों में अधिक खर्च कर दिए, और जब हिसाब लगाया, तो अपने खर्च के लिये केवल ⁄)॥। पैसे रोज़ बचते थे, रामजी उसी में अपना पेट भरना निश्चय कर लिया, और रोज़ाना दो पैसे की सवेरे और एक पैसे की शाम को रोटी खाने लगे। एक दिन हलवाई ने यह कहा कि तुम रोज़ रोटी के साथ दाल मुफ़्त खा जाते हो, जाओ, मैं एक पैसे की रोटी नहीं बेचता। उसके वचन सुनकर रामजी ने अपने लिये क्या प्रबंध किया।

दोहा—हलवाई के वचन से, हुए न रामजी दीन।
एक समय भोजन करूँ, प्रण ऐसा कर लीन॥

एक समय ही भोजन करना, श्रीराम ने दिल में ठहराया है।
दुःखसुखों का कुछ ध्यान न कर, पढ़ने से नेह लगाया है॥
बी० ए० में रामजी पढ़ते थे, अति श्रम भी वह करते थे।
धन की कमताई के कारण, अक्सर भूखे भी रहते थे॥

दोहा—अभाग्यवश ऐसा बना, आन वहाँ पर मेल।
बी० ए० के इम्तहान में, हुए रामजी फ़ेल॥

कुछ ऐसे परचे वहाँ जचे, जिससे कालिज थर्राय गया।
लड़कों का नहीं शिक्षकों का दिल, जिसके कारण घबराय गया॥
जो लड़के बिलकुल बुद्धू थे, पढ़ने में पीछे रह जाते थे।
इम्तहान के जो थे अयोग्य, प्रोफ़ेसर नहीं भेजा चाहते थे॥
वह पहुँचे जभी परीक्षा में, तो अव्वल नम्बर उत्तीर्ण हुए।
रामजी से तीव्र विद्यार्थी, सब के सब अवतीर्ण हुए॥

श्रीराम के फ़ेल हो जाने से, सबने दिल में दुख पाया है।
सारे प्रोफ़ेसरों ने मिलकर, आंदोलन एक उठाया है॥
दोहा—इनके परचे फिर जचें, ठहरी यहीं यह राय।
प्रिन्सिपल साहब ने दिया, झट एक पत्र पठाय॥
पर ऐसा नहीं नियम था, परचा फिर जँच जाय।
इस कारण सब रह गए, मन में शोक मनाय॥
इस खबर के सुनने से राम के, दिल को कुछ थोड़ा दुःख पहुँचा।
पर पथ से अपने डिगे नहीं, आगे पढ़ने ही को सोचा॥
मन में वह अब यह सोचते थे, हे ईश्वर क्या आफ़त आई।
हम फ़ीस कहाँ से देवेंगे, नहीं पास हमारे एक पाई॥
इस वर्ष फ़ेल हो जाने से, स्कालरशिप नहीं पाएँगे।
पुस्तकों का, भोजन का प्रबंध, कैसे हे नाथ चलाएँगे॥
दोहा—इन बातों को सोचकर, मन में कुछ दुःख पाय।
ईश्वर से की प्रार्थना एकांत में जाय।

(राम की ईश्वर-प्रार्थना)

कुंदन के हम डले हैं, जब चाहे तू गला ले।
बावर न हो, तो हम को, ले आज आज़मा ले॥
जैसे तेरी ख़ुशी हो, सब नाच तू नचा ले।
सब छान-बीन कर ले, हर तौर दिल जमा ले॥
राज़ी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है।
याँ यों भी वाह वाह है, और वों भी वाहवा है॥ (टेक)

या दिल से अब ख़ुश होकर, कर हमको प्यार, प्यारे!
या तेग़ खैंच ज़ालिम, टुकड़े उड़ा हमारे॥
जीता रखे तू हमको, या तन से सर उतारे।
अब राम तेरा आशिक़, कहता है यों पुकारे॥

राज़ी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है।
यहाँ यों भी वाहवा है, और वों भी वाहवा है॥

दोहा—जिन कानों में गाई थी, ध्रुव की करुण पुकार।
उन कानों में राम की, पहुँची यह झनकार॥

अब भी अपने भक्तों के दुःख, आकर भगवान मिटाते हैं।
श्रद्धा से उनका ध्यान करो, तो नंगे पाँव धाते हैं॥
जब राम ने प्रेम में गद्गद् हो, निज अश्रु भेंट चढ़ाए हैं।
तब झंडूमल हलवाई ने, आ ऐसे वचन सुनाए हैं॥
हे नाथ, दास हम आपके हैं, बस इतनी कृपा कीजिएगा।
प्रार्थना मेरी इस वर्ष आप, मेरे यहाँ भोजन कीजिएगा॥

दोहा—तीर्थ राम महराज को, गई बात यह भाय।
झंडू के गृह जायकर, रोटी लेते खाय॥

वार्ता—इस प्रकार रामतीर्थजी की प्रार्थना ईश्वर ने सुन ली, और झंडूमल हलवाई के यहाँ रोटी खाने व रहने का प्रबंध हो गया। इसके अलावा कॉलेज के प्रोफ़ेसरों ने उन्हें धीरज दिया, और गणित के प्रोफ़ेसर गिलबर्टसन साहब ने फ़ीस देना स्वीकार किया।

दोहा—इस प्रकार सबने दिया, ढाढ़स उन्हें बँधाय।
पुनः बी० ए० में राम को, भरती दिया कराय॥

अबकी मरतबा रामजी, पढ़ने में अति श्रम करते थे।
पर शरीर अब कुछ रुग्ण हुआ, अस्वस्थ रहा वह करते थे॥
एक समय प्रिन्सिपल साहब ने, इनको अपने ढिग बुलवाया।
और मीठी-मीठी बातें करके, एक पैकेट इनको दिखलाया॥
जब राम ने उसको खोला, तो उसमें नोट नज़र आए।
जब उनको गिनकर के देखा, तो तीस रुपए सम्मुख पाए॥
तब राम ने निज मन में समझा, यह मदद हमारी करते हैं।
शायद यह रुपए हमको, प्रवेश फ़ीस को देते हैं॥

दोहा—बी० ए० के प्रवेश में, लगे थे रुपए तीस।
पर राम को प्रथम ही, मिल चुके थे रुपए बीस॥

वार्ता—उन दिनों बी० ए० के प्रवेश के लिये ३०) की आवश्यकता पड़ती थी, जिसे प्रिन्सपल साहब ख़ुफ़िया तौर पर ख़ुद देना चाहते थे, मगर तीर्थरामजी को उसी दिन एक सज्जन २०) देने का वचन दे गए थे, इस कारण रामजी ने केवल १०) लिये, और बाक़ी उनको लौटा दिए।

(कवित्त)

रामजी को दस रुपए ज़रूरी थे,
इस कारण उन्होंने बाक़ी रुपए लिये नहीं ;
दस रुपए लेकर बीस उनको लौटाल दिए,
ऐसी भी सत्यव्रती आज है दिखाय कहीं।
वाह-वाह धीर हृदय शाबाश है धीरता को,
मन वचन कर्म से जो दुःख दिया चाहे नहीं ;
ऐसे नर-रत्नों की कमी है आज भारत में,
दुःख के समय में भी मन जिसका ललचाय नहीं।

(कवित्त)

इस प्रकार संकट और दुखों को झेल रहे,
कभी नहीं रामजी का दिल ज़रा घबराया है।
कर्तव्य पथ पर सदा वीरों की तरह रहे,
पैर दिया आगे, नहीं पीछे को हटाया है॥
भारत के विद्यार्थी इससे शिक्षा ग्रहण करें,
युवकों के लिये चरित्र आदर्श दर्शाया है।
भूखे रहे, दुःख सहे, तो भी नहीं पीछे हटे,
खूब श्रम किया, सदा ईश का गुण गाया है॥

दोहा—इस प्रकार महराज का, गया वर्ष वह बीत।
पुनः परीक्षा का समय, आया परम पुनीत॥

दोहा—इस वर्ष श्रीराम ने, किया बी० ए० को पास।
आगे पढ़ने को उठी, और हृदय में आस॥

बी० ए० में रामजी पास हुए, और सर्वश्रेष्ठ पद पाया है।
एम्० ए० में आगे पढ़ने को, अब इनका दिल हर्षाया है॥
एम्० ए० में राम अब पढ़ते थे, और पढ़ने में श्रम करते थे।
साथ ही वह गुरु-भक्त भी थे, ईश्वर-आराधन करते थे॥
आज कल की तरह नहीं, सेनीमा-थेटर लखते थे।
यदि समय कभी मिल जाता तो, एकान्तवास वह करते थे॥
अथवा अपने साथियों को, वह पाठ पढ़ाया करते थे।
या कृष्णचन्द्र की लीला को, अक्सर वह गाया करते थे॥

दोहा—इस प्रकार पढ़ते रहे, कौतुक किये नवीन।
गणित-शास्त्र में हो गये, राम बहुत प्रवीण॥
कभी एक क्षण को नहीं, जाने देते व्यर्थ।
सदा कार्य करते रहें, जो हो उचित यथार्थ॥

गणित - शास्त्र में तीर्थराम, सारे कालिज में आला थे।
जितने विद्यार्थी वहाँ पर थे, यह उन सबमें बाला थे॥
इसका प्रमाण यों होता है, जो हमको सुनने में आया था।
किसी प्रोफ़ेसर की छुट्टी में, श्रीराम ने गणित पढ़ाया था॥
इस प्रकार ख़ुद पढ़ते रहते, औरों को आप पढ़ाते थे।
गुरु-सेवा का रखते थे ध्यान, ईश्वर से नेह लगाते थे॥
विद्यार्थी - जीवन से ही उन्हें, दुनिया शून्य सी लगने लगी।
सच्चिदानंद परमेश्वर में, बस उनकी भक्ती बढ़ने लगी॥

(कवित्त)

इस प्रकार सत्तरह अप्रैल अट्ठारा सौ तिरानवे में
राम ने एम्० ए० में प्रवेश कर लीना है;
पढ़ाई के ख़र्च का इस वर्ष का प्रबंध

राम ने अपनी छात्रवृत्ती से..कीना है।
आप पढ़ें, समय मिले औरन कूँ पढ़ावें जाय,
रात - दिन कार्य - क्रम पढ़ने का कीना है;
एम्० ए० की परीक्षा दीनी, ख़ूब गुरु-भक्ति कीनी,
एकान्तवास किया ईश्वर को चीन्हा है।

दोहा—ऐसे सतवादी हृदय, कहीं-कहीं पर कोय।
ऐसे पुरुषों का चरित्र, किससे वर्णन होय॥

वार्ता—श्रीरामतीर्थजी को विद्यार्थी-जीवन से ही ईश्वर का ध्यान और एकान्तवास अच्छा लगता था, अतः आपने एम्० ए० पास करने के बाद कुछ काल एक-दो स्थानों पर प्रोफ़ेसरी का कार्य किया, परंतु उससे आपकी तृप्ति नहीं हुई, बल्कि ईश्वर-भक्ति दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करती गई। इस आनंद के समय में आपने तीर्थ कटासराज जाने का विचार किया, और मेले के अवसर पर वहाँ पधारे।

दोहा—इस प्रकार आनंद में, गए कछुक दिन बीत।
अट्ठारह सौ अट्ठानवे का, आया समय पुनीत॥
उसी समय महाराज के, मन में उठा विचार।
कटासराज के जान को, स्वामी हुए तयार॥

(कवित्त)

कटासराज तीर्थ की यात्रा के लिये,
जभी स्वामी ने अपना दिल जमाया है;
मन में आनंद हुआ, चलने का प्रबंध किया,
यहाँ का काम छोड़ बिस्तर को बँधाया है।
कटासराज पहुँच गए, कुछेक काल वहाँ रहे,
ख़ूब सतसंग किया, सबका मन लुभाया है।
बड़े-बड़े नास्तिकों की नास्तिकता भंग भई,
राम के वचनों का अमृत जब पाया है।

दोहा—इस प्रकार उस तीर्थ पर, विचरे राम सुजान।
फिर निज गृह में पलट, आए कृपानिधान॥

(कवित्त)

कटासराज तीर्थ को राम गए तो सही,
लेकिन मन ने आनंद नहीं पाया है;
मन में यह सोच रहे एकान्त कहीं वास करें,
मनुष्यों के बीच रहना नहीं उन्हें भाया है।
गर्मियों की छुट्टियों में घर से आप चल दिए,
हरीद्वार पहुँचे हृदय ज़रा हर्षाया है;
हृषीकेश होते हुए तपोवन पहुँच गए,
ब्रह्मपुरी के समीप आसन जमाया है।

वार्ता—सन् १८९८ की गर्मियों की छुट्टियों में रामतीर्थजी ने एकान्त वास करने के लिये हरद्वार और हृषीकेश होते हुए तपोवन में पहुँचकर ब्रह्मपुरी के मंदिर के समीप अपना आसन जमा दिया। यह स्थान हृषीकेश से लगभग ८ मील का दूरी पर है। इस स्थान पर आपने एकाग्रचित्त होकर आत्म साक्षात्कार किया, और जो आनंद पाया है, उसे स्वयं अपनी लेखनी से 'जलवये कोहसार'-नामक पुस्तक में लिखा है।

दोहा—इस प्रकार तपोभूमि में, विचरे राम सुजान।
फिर निज आश्रम में पलट, आए कृपानिधान॥
ईश्वर प्राप्ती का सदा, रहता था उद्देश।
पुत्र जन्म का फिर मिला, इनको एक संदेश॥

पुत्र का होना सुन करके, श्रीराम ने ऐसा फ़रमाया।
यदि पुत्र हुआ, तो होने दो, यह भी है ईश्वर की माया॥
गर बेटा मेरे हुआ भी तो, इसमें अपना हर्ज ही क्या?
समुद्र में नदी एक आय मिली, तो उसमें है आश्चर्य ही क्या?
ओहो कैसी अद्वैतता है, कैसा कर्तव्य दिखाया है।

पुत्र - रत्न को पाकर भी, नहीं हृदय ज़रा हर्षाया है ॥
दोहा—इस प्रकार महराज ने, किया दुई को दूर।
ईश्वर के अब प्रेम, में रँगा हृदय भरपूर ॥
अब मस्ती का आपके, उमड़ उठा दरियाव।
पंजाब प्रांत में आपका, फैला खूब प्रभाव ॥

(श्रीनारायणदास और रामतीर्थजी की भेंट)

उन दिनों पंजाब-प्रांत में एक, श्रीनारायणदासजी रहते थे।
सत्यार्थप्रकाश थे पढ़े हुए, और तर्क-वितर्क बहु करते थे ॥
जब कभी किसी उपदेशक को, वह आया सुन पाते थे।
तो अपना काम हर्ज करके, झट उनसे जा भिड़ जाते थे ॥
जब से नारायणदासजी ने, गोसाईंजी का नाम सुना।
तो उनसे भी भिड़ने के लिये, कुछ दिल इनका उछला-कूदा ॥
पर इनके तार्किकपन के कारण, सब इनसे घबराते थे।
जब यह गोसाईं से मिलना चाहते, तो लोग टाल कर जाते थे ॥
एक रोज़ एक मित्र इनके, प्रण इनसे यह करवा करके।
खामोश अगर तुम रहो वहाँ, तो चलूँ मैं साथ लिवा करके ॥
दोहा—श्रीनारायणदास थे, दर्शन को तैयार।
इस कारण इस शर्त को, किया तुरंत स्वीकार ॥
फिर नारायण चल दिए, मित्र - सहित हर्षाय।
कुछ ही समय के बीच में, गए वहाँ पर आय ॥
श्रीराम के दर्शन होते ही, नारायण का सब भ्रम भागा।
या यों सूर्य का प्रकाश देख, सम्पूर्ण विश्व का तम भागा ॥
उन नयनों का, उन बैनों का, उस भोले-भाले चेहरे का—
उस सीरत का, उस सूरत का, उस प्रकाशवाले मुखड़े का—
ऐसा कुछ अजब प्रभाव पड़ा, नारायण रह गए चकित होकर।
श्रीराम की सूरत तकते थे, नहीं बोल सके एको अक्षर ॥

दोहा—इस प्रकार उस जगह पर हुए नरायण मंद।
मन की चंचलता रुकी, आँख हो गई बंद ॥

कई रोज तलक श्रीनारायण, खामोश वहाँ बैठे रहते।
केवल दर्शन करते रहते, मुख से कुछ भी न कहते॥
मन ही मन में यह भाव उठा, यदि मौक़ा मैं कुछ पाऊँगा।
इनके उपदेशों के द्वारा, मैं संशय सभी मिटाऊँगा ॥
अद्भुत था यह तप का प्रभाव, जो सारे समाज पर छाया है।
नारायण जैसे तार्किक को भी, जिसने मौन बनाया है ॥
ईश्वर की अद्भुत माया है, जिसका न भेद कोई पाता था।
जो राम से मिलने को आता, वह उनका ही हो जाता था ॥

दोहा—नारायण और राम का, बढ़ा बहुत सतसंग।
धीरे धीरे हो गए, एक जान दो अंग ॥

तब नारायणदास गृहस्थी थे, पर आसक्ति कुछ नहिं रखते थे।
श्रीराम को अपना जानते थे, उनकी आज्ञा पर चलते थे ॥
रामोपदेश सुनते सुनते, मन का सब भेद मिटा डाला।
गृह-आश्रम से ही अपने को, श्रीराम के अर्पण कर डाला ॥

दोहा—इस प्रकार सतसंग से, गए कछुक दिन बीत।
सन् उन्नीस सौ का समय, आया परम पुनीत ॥

(कवित्त)

इस तरह आनंद में रामजी कुछ काल रहे,
नौकरी को छोड़ दिया ईश्वर मन भाया है;
"उत्तराखंड चलें, परवतों पर वास करें,
एकांत अभ्यास करें," निश्चय यह उठ आया है।
दिल में संकल्प किया, कुछ साथियों को संग लिया,
लाहौर से कूँच का डंका बजवाया है;

रेल पर सवार हुए, हरिद्वार आय गए,
नारायण और पत्नी-सहित डेरा यहाँ लगाया है।

वार्ता—जूलाई सन् १९०० में राम ने नौकरी छोड़ दी, और कुछ साथियों को तथा पत्नी और नारायणदास को साथ लेकर वनों को सिधारे। इस समय आपके पुत्र भी साथ थे। लाहौर से चलकर हरिद्वार होते हुए बद्रीनारायण का मार्ग पकड़ लिया। देवप्रयाग से कुछ लोग तो बद्रीनारायण चल दिये, और आप गंगोत्तरी की ओर चल पड़े।

दोहा—इस प्रकार हरिद्वार में, पहुँचे राम सुजान।
गंगाजी में जा किया, फिर सबने स्नान॥
भोजन का प्रबंध नित्त, करें नरायणदास।
इनके दिल में भरी थी, गुरु सेवा की आस॥

फिर हरीद्वार से चलकर के, हृषीकेश में आये हैं।
फिर लछमण-झूला को देखा, और टिहरी नगर में आये हैं॥
यहाँ से दो मील दूर चलकर, मुरलीधर का बागीचा था।
एकान्त वास करने के लिये, स्थान बहुत यह अच्छा था॥

दोहा—एकान्त वास यहाँ करेंगे, मन में यह ठहराय।
गोसाईं तीर्थराम ने वहाँ, आसन दिया जमाय॥
जो कुछ जिसके पास था, रुपया, पैसा, माल।
गंगाजी में आपने, फिकवाया तत्काल॥

श्रीराम ने सब पैसा-कौड़ी, गंगा में फेंक बहाया है।
और अहंग्रह-उपासना के लिये, सबको पृथक बैठाया है॥
इतने में ईश्वर-भक्ती ने, क्या अपना रंग दिखाया है।
कलकत्ता-क्षेत्र का मैनेजर, झट उसी जगह पर आया है॥

दोहा—बोला ऐसे राम से, जोड़ के दोनों हाथ।
भोजन का प्रबंध हम, करें आपका नाथ॥

वार्ता—उस जगह पर राम ने सबका पैसा-कौड़ी गंगा में फिकवा

दिया था, और केवल ईश्वर पर भरोसा करके अलग-अलग सबके आसन लगवा दिये थे। ईश्वर की कृपा से काली कमलीवाले बाबा के कलकत्ता-क्षेत्र के मैनेजर बा० रामनाथ वहाँ पर आये, और सबके भोजनों का प्रबंध कर चले गये। राम के इस ईश्वर-विश्वास से सबको बड़ा आश्चर्य हुआ, और भविष्य के लिये दृढ़ विश्वास हो गया।

कुछ समय यहाँ रहने के बाद, एक दिन साथियों को तजकर।
अपनी स्त्री को सोता छोड़, चल दिये न जाने राम किधर॥
जिससे महराज की पत्नी के, दिल में कुछ ऐसी चोट लगी।
बीमार हो गई वहाँ पे वह, अपने को नहीं सँभाल सकी॥
कुछ काल बाद कृपा करके, फिर राम लौट वहाँ आए हैं।
पर वह तो अति बीमार हुई, सङ्कट में प्राण फँसाए हैं॥
जब उनके स्वास्थ होने के लिये, नहिं कोई यत्न नजर आया*।
तब नारायणजी के द्वारा, उनको उनके घर भिजवाया॥

दोहा—इस प्रकार श्रीमती को, उनके घर पहुँचाय।
नारायणजी राम ढिग, पहुँचे हैं फिर जाय॥
अब वहाँ पर श्रीराम को, गुज़र गए छः मास।
संन्यास आश्रम के लिये, दिल में आई आस॥

अब संन्यास आश्रम को, श्रीराम का दिल हुलसाया है।
नारायणदास, तुलाराम से, वस्त्रों को रँगवाया है॥
उन्निस सौ एक ईसवी में, गंगा तट पर जाकर के।
शिखा सूत्र के बंधन को, स्वामी ने दिया मिटा करके॥
वास्तव में तो पहले ही से, रामजी पूरे त्यागी थे।
मन-वाणी और कर्मों से, वह सदा से संन्यासी थे॥

वार्ता—श्रीतीर्थरामजी ने अब अपना पूरा संन्यासी भेष बना

---

*उनकी स्त्री ने प्रार्थना की कि मुझे घर भिजवा दिया जावे, तब रामतीर्थजी ने उन्हें नारायणदास द्वारा घर भिजवा दिया।

डाला, और तीर्थराम के बजाय स्वामी रामतीर्थ अपना नाम रख लिया। संन्यास लेने के छः महीने बाद तक रामजी वहीं रहे। पर जब वहाँ लोगों की भीड़ होने लगी, तो १४ जून, १९०१ में आप चुपके से चल दिए, और वहाँ से ५ या ६, मील दूरी पर बमरौगी गुफा में रहने लगे। वहाँ भी २-१, मास निवास कर, फिर नारायणदास व तुलारामजी को साथ ले गंगोत्तरी को ओर चल दिए।

दोहा—इस प्रकार संन्यास ले, चले वनों को राम।
गंगोत्तरी में पहुँचकर, किया वहाँ विश्राम॥

कुछ काल रामजी वहाँ ठहरे, फिर बूढ़े केदार में आए हैं।
त्रियुगी नारायण से होकर, बद्रीनारायण आए हैं।

दोहा—बद्रिकाश्रम में जभी, पहुँचे राम सुजान।
हर प्रकार से वहाँ पर, हुआ बड़ा सम्मान॥

(३ नवम्बर, १९०१ में स्वामीजी बद्रीनारायण पहुँचे थे।)

बद्रीनारायण से लौटे, तब कृष्ण-भूमि में आये हैं।
मथुरा नगरी को देख-देख, मन में स्वामी हर्षाए हैं॥
उन दिनों वहाँ पर सभा थी एक, जिसके प्रधान श्रीस्वामी थे।
उपदेश आपने किये बहुत, जो सबके हित सुखगामी थे॥
फिर वहाँ से चलकर महाराज, फ़ैज़ाबाद में आये हैं।
उन्निस सौ दो में स्वामी ने, जहाँ अपने वाक्य सुनाए हैं॥
साधारण धर्म सभा का वहाँ, उस समय था उत्सव रचा हुआ।
नारायणदास जी ने भी दिया, एक भाषण वहाँ पर जचा हुआ॥
यह भाषण इनका दूजा था, पर इतना प्रभाव यह रखता था।
जितना यह बोलते जाते थे, उतना ही प्रेम बहु बढ़ता था॥
जब स्वामी ने इनके वचनों का, ऐसा अद्भुद प्रभाव देखा।
तो फिर संन्यास लेने के लिये, स्वामी ने इन्हें आदेश दिया॥

दोहा—इस प्रकार निज शिष्य को, दिया राम संन्यास।
अब स्वामीजी बन गये, श्रीनारायणदास ॥
आगे चलकर यह हुए, नारायण स्वामी विख्यात।
गुरु कृपा से हो गये, आप जगत-विख्यात ॥

वार्ता—मार्च १९०२ में नारायणदास को संन्यास मिला, और वह राम से अलग होकर गेरुए वसन पहन देश-देश में विचरने लगे। किंतु चार महीने बाद जून १९०२ में स्वामीजी के निकट फिर पहाड़ों पर आ गये। मई १९०२ में जब राम फिर पर्वतों पर गये और टिहरी से लगभग ११ मील की दूरी पर कौड़िया चट्टी पड़ाव के निकट अपना आसन लगाया, तो संयोग-वश महाराजा टिहरी जो किसी कार्य-वश देहरादून वाइसराय से मिलने जा रहे थे, इसी पड़ाव पर ठहरे, और राम बादशाह के ठहरने की खबर सुनकर उनसे मिलने का विचार किया, जिसे महाराजा के वज़ीर ने स्वामीजी तक पहुँचाया, और स्वामीजी इसे स्वीकार कर साथ चल दिये। महाराजा ने स्वामी के दर्शन का लाभ उठाया और प्रार्थना की कि यदि आप हमारे प्रताप नगर में निवास करें, तो मैं समय-समय पर आपके दर्शन का लाभ उठा सकूँगा, इसे भी स्वामी ने स्वीकार किया, और कुछ दिन टिहरी में निवास करने के बाद आप प्रतापनगर में गए।

दोहा—एक समय पर्वतों पर, जब ठहरे थे राम।
टिहरी के महराज ने, किया तभी यह काम ॥
अँग्रेज़ी का आपने, पढ़ा था एक अखबार।
आ स्वामीजी से कहा, उसका समाचार ॥

जापान देश में सभा एक, सारे धर्मों की होवेगी।
ईश्वर - भक्ती प्रेमोपासन, की भी चर्चा होवेगी ॥
इससे विचार मेरा है यह, यदि आप वहाँ पर जाएँगे।
तो कृपा आपकी से स्वामी, वहाँ के झंडे लहराएँगे ॥

यदि भारत के प्रतिनिधि स्वरूप, जापान में आप पधारेंगे।
तो हमें पूर्ण आशा है यह, वहाँ सबको आप अपनाएँगे॥
दोहा—स्वामीजी के हृदय में, भरा हुआ था जोश।
राजाजी की बात सुन, रहे नहीं खामोश॥
बोले, अवश्य मैं जाऊँगा, ओ३म् की ध्वनि सुनाऊँगा।
ईश्वर - भक्ती दरसाऊँगा, अद्वैतामृत बरसाऊँगा॥
इन वचनों को सुन राजा ने, जाने का सभी प्रबंध किया।
तार भेज कलकत्ते को, जहाज़ का भी इंतज़ाम किया॥
पर राजा की यह इच्छा थी, स्वामीजी इकले जायँ नहीं।
नारायण को भी साथ-साथ, सेवा को लेते जायँ वहीं॥
यद्यपि राजा ने जहाज़ की, यात्रा का भय बतलाया था।
पर स्वामीजी निरद्वन्द रहे, उनको न वचन यह भाया था॥
दोहा—राजा के इस वचन पर, किया न जरा विचार।
ऐसे भारी कार्य को, हुए तनहा तैयार॥
टिहरी से चलकर स्वामीजी, जब लखनऊ नग्र में आए हैं।
यहाँ के कितने ही सज्जनों ने, दर्शन के लाभ उठाए हैं॥
जब सुना कि स्वामी जाय रहे, जापान देश को एकाकी।
तो उनको सबने समझाया, और मार्ग की विथा बयाँ करदी॥
पर उन्होंने कुछ भी सुना नहीं, चल दिए आप आगरे को।
वहाँ पहुँचकर स्वामी ने, जब ज़ाहिर किया इरादे को॥
तब मित्र-मंडली बोल उठी, तनहा न आप जाइए वहाँ।
मार्ग में कष्ट होता है बहुत, एक साथी भी चाहिए वहाँ॥
तब स्वामी ने कुछ सोचा-समझा, और एक तार भिजवाया है।
जापान साथ चलने के लिये, नारायण को बुलवाया है॥
दोहा—वहाँ से चलकर रामजी, कलकत्ते पहुँचे जाय।
आज्ञा पाकर वहीं पर, नारायण पहुँचे आय॥

कलकत्ते में जब हुआ, गुरु-शिष्य का संग।
कई रोज़ तक वहाँ रहा, उत्सव और आनंद ॥

अट्ठाइस अगस्त उन्निससौ दो में, स्वामी जापान सिधाए हैं।
नारायण स्वामी को साथ लिये, जाते मन में हर्षाए हैं ॥

(जापान जाने के समय जो आनंद राम के हृदय में उठा है, उसे सज्जन स्वयं उन्हीं की लेखनी से सुनिए।)

यह सैर क्या है अजब अनोखा, कि राम मुझ में मैं राम में हूँ।
बग़ैर सूरत अजब है जलवा, कि राम मुझ में मैं राम में हूँ ॥
सुरक़ए हुस्नो इश्क हूँ मैं, मुझी में राज़ो नियाज़ सब है।
हूँ अपनी सूरत पै आप शैदा, कि राम मुझ में मैं राम में हूँ ॥
ज़माना आइना राम का है, हरएक सूरत से है वह पैदा।
जो चश्मे हक़बीं खुली तो देखा, कि राम मुझ में मैं राम में हूँ ॥
वह मुझसे हर रँग में मिला है, कि गुल से बू भी कभी जुदा है।
हुबाबो दरिया का है तमाशा, कि राम मुझ में मैं राम में हूँ ॥
सबब बताऊँ मैं वजूद का क्या, है क्या जो दर परदा देखता हूँ।
सदा यह हर साज़ से है पैदा, कि राम मुझमें मैं राम में हूँ ॥
बसा है दिल में मेरे वह दिलबर, है आइना में खुद आइनागर।
अजब तहइय्यर हुआ यह कैसा, कि राम मुझमें मैं राम में हूँ ॥
मुक़ाम पूँछो तो लामकाँ था, न राम ही था न मैं वहाँ था।
लिया जो करवट तो होश आया, कि राम मुझमें मैं राम में हूँ ॥
अलस्तवातर है पाक जलवा, कि दिल बना तूरे-बर्क़-सीना।
तड़प के दिल यूँ पुकार उट्ठा, कि राम मुझमें मैं राम में हूँ ॥
जहाज दरिया में और दरिया, जहाज में भी तो देखिए आज।
यह जिस्म किश्ती है राम दरिया, कि राम मुझमें मैं राम में हूँ ॥

कलकत्ते से चलकर स्वामी, नागासाकी पर आए हैं।

फिर वहाँ से कोबे में होकर, योकोहामा में आए हैं ॥
यह जापान का भारी बंदर था, जहाज रुका स्वामी उतरें ।
सिंधवासियों के यहाँ पर, कुछ भारी कार-बार देखे ॥
फर्म बसीयामल-आसूमल के, मैनेजर यहाँ एक रहते थे ।
स्वामी को लेने के लिये, उन अपने नौकर भेजे थे ॥
दोहा—वह स्वामी को साथ में, अपने गये लिवाय ।
सेठों के वहाँ फर्म में, इनको दिया टिकाय ॥
मार्ग में कुछ गुरुद्वारे देखे, जिनसे स्वामी हर्षाये हैं ।
वहाँ पर गुरु भक्ती के अपने, स्वामी व्याख्यान सुनाए हैं ॥
जापान में जब स्वामीजी ने, इस प्रकार पदार्पण किया ।
तब याकोहामावालों से, अपने विचार को प्रकट किया ॥
कब धर्मसभा वह होवेगी, जब स्वामी ने ऐसे फरमाया ।
तब सबके सब चौंक उठे, अद्भुद विचार मन में आया ॥

(कवित्त)

स्वामीजी के वचन सुन सभीजन सोच करें,
बात यह कैसी श्रीमान ने सुनाई है ।
यहाँ पर किसी सभा और धर्म सम्मेलन की,
स्वामीजी खबर हम लोगों ने न पाई है ॥
कहीं पर किसी भी सभा के होने का नहीं जिक्र,
न जाने यह ख़बर नाथ किसने उड़ाई है ।
हमारी समझ में तो बात यह आय रही
किसी ने हँसी से यह ख़बर दी छपाई है ॥
दोहा—जब स्वामीजी ने सुनी, ऐसी गिरा गम्भीर ।
तन में उत्सुकता बढ़ी, हुए जरा अधीर ॥
सोचा मन में यह बात है क्या, कुछ पता न यहाँ पर लगता है ।
जाने क्या इसमें कारण है, जो भेद नहीं कुछ खुलता है ॥

टोकियो को अब प्रस्थान करूँ, सब भेद वहाँ खुल जाएगा।
क्योंकि वह केन्द्र यहाँ का है, सब पता वहाँ लग जाएगा॥
दोहा—यही सोचकर चल दिये, नग्र टोकिया ओर।
पूर्णसिंह के मकाँ पर, पहुँचे राम बहोर॥
एक पूर्णसिंह पजाब के थे, उन दिनों वहाँ पर पढ़ते थे।
फिर वह स्वामी के शिष्य हुए, और प्रेम से भक्ति करते थे॥
जब स्वामी ने इनसे पूछा, और धर्मसभा की बात कही।
तब पूर्णसिंह यों बोल उठे, इसका यहाँ पर कुछ ज़िक्र नहीं॥
यहाँ पर तो किसी सभा की भी, नहीं बात नाथ सुन पाई है।
शायद किसी मसखरे ने, यह झूँठी ख़बर छपाई है॥
दोहा—ये बातें सुन हृदय में, सोचें राम सुजान।
नग्र टोकिया में भी, मिला न पता-निशान॥

वार्ता—जब स्वामीजी को टोकिया में भी कोई पता न लगा, तो आपने यह निश्चय किया कि किसी कारण से यह ख़बर झूँठ छप गई है, इस लिये स्वामीजी ने भारत को इस ख़बर के झूँठ होने के तार भिजवा दिए ताकि और कोई भारतीय यहाँ आकर धोखा न खावें।

उन दिनो नग्र टोकियो में, छत्रे का सरकस ठहरा था।
जो अपने खेलों के द्वारा, मन मुग्ध सभी का करता था॥
वह उसी समय जापान छोड़, अमरीका जाना चाहता था।
और स्वामीजी का साथ-साथ, अपने ले जाना चाहता था॥
तब हाथ जोड़कर छत्रे ने, स्वामी से की ऐसे विनती।
यदि नाथ साथ चलते मेरे, तो कृपा बड़ी भारी होती॥
दोहा—स्वामीजी ने प्रार्थना, कर ली यह स्वीकार।
अमरीका के जान को, हुए आप तैय्यार॥
बोले लो नारायण स्वामी, मैं अमरीका को जाता हूँ।
जापान देश में तुम ठहरो, कुछ कारज तुम्हें बताता हूँ॥

तुम ब्रह्मा और सीलोन में जा, वेदान्त के डंके बजवाओ।
होकर तुम निरद्वंद फिरो, एकता के झंडे फहराओ॥
मैं तुमको आज्ञा देता हूँ, इसको चित देकर सुन लेना।
वेदान्त का खूब प्रचार करो, और सदा चित्त उसमें देना॥
नारायण सुन लो चित्त लगाय, तुम्हें है-यह उपदेश हमारा। (टेक)
यहाँ से ब्रह्मा को तुम जाओ, फिर जाकर सीलोन मझाओ।
वेदान्त-सिद्धान्त खूब सुनाओ, जो हैगा उद्देश हमारा। (नारायण)
अफ्रीका योरूप में तुम जाना, वहाँ वेदान्त का वाक्य सुनाना।
एकता का झंडा फहराना, यही हैगा आदेश हमारा। (नारायण)
करो वेदान्त का खूब प्रचार, द्वेपता दुई को देना मार।
न रुकना कहीं पर हिम्मत हार, है साक्षी स्वामी सर्वेश तुम्हारा। (ना०)
करो अब तुम ऐसे कार, बहा दो अद्वैता की धार।
देश का हो जावे उद्धार, तो जीवन होवे सुफल तुम्हारा। (ना०)
करूँ मैं अमरीका को प्रस्थान, कहा यह मेरा लेना मान।
न आना तुम भी हिन्दुस्तान, न जब तक हो लौटना हमारा। (ना०)
दोहा—इस प्रकार समझायकर, दे सांत्वना बहोर।
चले राम हर्षित हिए, अमरीका की ओर॥

श्रीराम के जाने के पीछे, नारायण स्वामी वहीं रहे।
इन्डो जापान क्लब खोला, और वहाँ बहुत-से काम किये॥
विद्यार्थी पूर्णसिंहजी जो, उस समय जापान के थे वासी।
स्वामी के उपदेशों से वह, हो गये वहाँ पर सन्यासी॥
स्वामी नारायणजी की तरह, वह भी थे रामजी के चेले।
कुछ काल ठहर जापान में वह, फिर भारत को आये थे चले॥
जब इनके मात-पिता ने इन्हें, संन्यासी वेप में था देखा।
तो फिर गृहस्थ में लाने को, श्रीराम को संदेशा भेजा॥
तब स्वामीजी ने दी आज्ञा, यदि चाहो गृहस्थ का कार करो।

मात-पिता का हित चित से, सेवा, आदर, सत्कार करो ॥

दोहा—तब से पूर्णसिंहजी, हुए पुनः गृहस्थ।
लेकिन पालन करें थे, सदा धर्म सन्यस्थ ॥
सदा आप करते रहे, सभी कार्य अति युक्त।
उन्नीससौ इकतीस में, चय से पाई मृत्यु ॥

वार्ता—इस प्रकार १९३१ ई० में श्रीपूर्णसिंहजी इस लोक को छोड़ निज स्वरूप में लीन हो गए।

अब इस कथा को यहीं छोड़, फिर हम मेहवर पर आते हैं।
नारायण स्वामीजी का वृतान्त, भी थोड़ा तुम्हें सुनाते हैं ॥
जापान देश से चल करके, चीन देश में आए हैं।
और वहाँ से सिंगापुर होते, फिर ब्रह्मा देश में आए हैं ॥
कुछ काल वहाँ पर आप रुके, फिर लंका-द्वीप को धाए हैं।
वेदान्त का ख़ूब प्रचार किया, अच्छे उपदेश सुनाए हैं ॥
कई जगह आप उतरे ठहरे, वेदान्त का ख़ूब प्रचार किया।
अच्छे - अच्छे उपदेश दिए, गुरु वचनों का सत्कार किया ॥
इस तौर से छोटे स्वामी ने, अपना भी सुयश फैलाया है।
कई एक देश घूम फिरकर, लंदन में क़दम जमाया है ॥

दोहा—नारायण महाराज जी, लंदन पहुँचे जाय।
ठहरे वहाँ कुछ काल तक, परमानंद मनाय ॥

पर इसी बीच में वहाँ एक, घटना का अद्भुद मूल हुआ।
लंदन का जल - वायु जो था, वह कुछ उनके प्रतिकूल हुआ ॥
अस्वस्थ वहाँ वह रहने लगे, जिससे कमज़ोरी आई है।
कुछ मित्र डॉक्टरों ने मिलकर, यह उत्तम राय बताई है ॥
बोले, अति शीघ्र आप लौटें, महराज यहाँ से भारत को।
वरना कलंक लग जावेगा, हे नाथ! हमारे लंदन को ॥

दोहा—मित्रों की यह राय सुन, हुए आप लांचार।
राम की आज्ञा के लिये, भेजा समाचार॥
इस कारण श्रीनारायणजी, लंदन से भारत लौटे हैं।
स्वामी के वापिस आने से, छः माह पेश्तर आये हैं॥
दोहा—अब इस गाथा को यहीं, सज्जन दीजै छोड़।
सुनिये रामचरित्र को, थाम हृदय कर गौर॥
जापान से चलकर स्वामीजी, अमरीका में जब आये हैं।
कई स्थानों में वहाँ विचरे, आनंद हृदय में पाये हैं।
प्रोफ़ेसर छत्रेजी ने भी, स्वामी की बहुत करी सेवा।
जो कुछ भी उनसे हो पाया, सो सभी करी उनको सुविधा॥
कुछ रोज़ तलक तो स्वामी जी, छत्रे के संग रहे थे वहाँ।
फिर बाद में आप हो गये थे, एक डॉक्टर के यजमान वहाँ॥

वार्ता—अमरीका में कुछ दिन तक तो रामजी छत्रे के साथ रहे, पर बाद में अमरीकावालों ने इन्हें छत्रे से छीन लिया। बहुत दिनो तक आप डॉक्टर एलबर्ट हिल्लर के पास सान फ्रांसिसको में रहे। यह नगर केलीफोर्निया का प्रसिद्ध क़स्बा है। उक्त डॉक्टर महाशय ने डेढ़ वर्ष तक स्वामीजी को अपने पास रक्खा, और अपना एक बँगला उनके लिये रिजर्व कर दिया।

दोहा—अमरीका में रामजी, ठहरे थे कुछ काल।
आपके वचनों से वहाँ, सभी हुए ख़ुश हाल॥
व्याख्यान आप जहाँ देते थे, मन सबका वहाँ हर लेते थे।
हरएक ईश का भक्त बने, कुछ ऐसी बातें कहते थे॥
महराज का ऐसा नाम हुआ, अमरीका कुल थर्राय उठा।
जो प्रेसीडेन्ट वहाँ के थे, उनका भी दिल हुलसाय उठा॥
वह भी दर्शन करने आये, स्वामी के समीप हर्षित होकर।
स्वामी के वचनामृत पीकर, लौटे मन में प्रफुलित होकर॥

अमरीका में एक लेडी थी, जो तर्क बहुत कुछ करती थी।
वह स्वामी से मिलने आई, और बहस की इच्छा रखती थी॥
उस समय पै स्वामी बैठे थे, अनुराग समाधि लगाये हुए।
ध्यान में अपने मग्न थे यह, आसन श्रुती जमाये हुए॥
स्वामी को जब उसने देखा, तो भूल गई सब हुसियारी।
खामोश चित्र-सी खड़ी रही, नेत्रों से अश्रु हुए जारी॥
दोहा—आखिर को महराज ने, जब खोले अपने नैन।
हाथ जोड़कर प्रेम से, बोली ऐसे बैन॥
मैं चेली हूँ आपकी, सुनिये कृपा-निधान।
अब कुछ शिक्षा गुरूजी, करिये मुझे प्रदान॥
कितनी ही अमरीका की लेडी, अब तक भारत में आती हैं।
और गाँव मुरालीवाला के, दर्शन करने को जाती हैं॥
स्वामी की जन्मभूमि लखकर, मन में आनंद मनाती हैं।
नारायण स्वामी से मिलकर, अब भी सतसंग उठाती हैं॥
दोहा—इस प्रकार महराज दे, अमरीका को उपदेश।
वहाँ से चल आये तुरत, राम मिस्र के देश॥
मिस्र देश में पहुँच राम, वहाँ अद्भुत दृश्य दिखाया है।
सम्पूर्ण मिस्र वासियो को, भी अपना अंग बनाया है॥
धन्यवाद हे राम तुम्हें, और धन्य तुम्हारी माया है।
जिस देश में आप पधार गये, सबको अपना ही बनाया है॥
ऐ भारतबासी, सोचो तो सही, क्या तुमको राम सिखाय रहे।
दुई का दिल से कर दो नाश, एकता का पाठ पढ़ाय रहे॥
जब सब अपने, तब हम सबके, सारी आतमाएँ अपनी हैं।
फिर भी हम दुई को देख रहे, बस यही हमारी ग़लती है॥
दोहा—इससे सब मिल आज से, करो दुई का नाश।
भारत में फिर ऐक्य का, होवे सूर्य प्रकाश॥

दोहा—इस प्रकार श्रीरामजी, देकर अति उपदेश।
सन् उन्नीस सौ चार में, लौटे भारत देश॥
आठ दिसंबर था तभी, मंगल का शुभ वार।
उतरे बम्बई में जभी, भारत के सरदार॥

वार्ता - श्रीमान् स्वामी तीर्थरामजी अन्य देशों में भ्रमण करके और अपने उपदेशों से उनके हृदयों को पवित्र करके भारतवर्ष को प्राण-दान देने के लिये फिर भारत में पधारे।

दोहा—उमड़ उठा घन की तरह, यह सम्वाद तमाम।
अब भारत में लौट फिर, आए स्वामी राम॥
बम्बई से चल रामजी, पहुँचे पुष्कराज।
वहाँ मिले फिर आपसे, नारायण महाराज॥

कवित्त

भारत में लौटने पर श्रीमान स्वामीजीने,
अपना कार्य-क्रम इस भाँति से बनाया है।
नारायण को आज्ञा दी सिन्ध देश जाओ तुम,
काबुल और अफ़गानिस्तान जाने को बताया है।
वेदान्त का प्रचार हो सारे देश भारत में,
अंतर-आत्मा में अब यही समाया है।
मैं भी जाऊँ भारत में और कुछ भ्रमण करूँ,
बाद में एकांत वास करना ही मन भाया है।

दोहा—नारायण को भेजकर, सिन्ध देश की ओर।
आप चल दिए वहाँ से, युक्त प्रदेश बहोर॥

लखनऊ में जब स्वामी आए, भारी स्वागत सत्कार हुआ।
जिस क़दर यहाँ पर प्रेमी थे, उन सबको हर्ष अपार हुआ॥
कई स्थानों पर स्वामी ने, अपने उपदेश सुनाए थे।
और अन्य देश के अनुभव भी, आपने खूब बताए थे॥

कई रोज़ यहाँ स्वामी ठहरे, प्रेमियों को दर्शन देते थे।
कैसा भी कोई आ जाये, सबको अपना कर लेते थे॥
दोहा—फिर चलकर महराजजी, मथुरा पहुँचे जाय।
ठहरे वहाँ कुछ काल तक, हृदय आनंद मनाय॥
उस जगह पर जो थे राम-भक्त, उनके मन में यह भाव उठा।
कोई नई संस्था खोलें आप, सबके मन में यह चाव उठा।
तब हाथ जोड़कर स्वामी से, लोगों ने यह प्रस्ताव किया।
पर स्वामीजी ने इन बातों को, बिलकुल हि अस्वीकार किया॥
बोले अब तक जो हैं समाज, वे सब हमने ही खोले हैं।
सारी सोसाइटियाँ अपनी हैं, और हम भी उन्हीं सबों के हैं॥
दोहा—मैं सबका और सब मेरे, दुई का यहाँ क्या काम।
सभी संस्थाओं में, अब राम करेगा काम॥
इस प्रकार मैदानों में फिरकर, उत्तराखंड को धाए हैं।
फिर व्यास-आश्रम में जाकरके, प्रभु डेरे आप लगाए हैं॥
कुछ काल वहाँ स्वामी ठहरे, और वहाँ वेदाध्ययन किया।
फिर इससे आगे चलने को, स्वामीजी ने प्रस्थान किया।
टिहरी नग्र से तीस मील पर, एक स्थान नज़र आया।
जहाँ बड़ा भयानक जंगल था, वह स्वामीजी के मन भाया।
यह जगह वासिष्ठ-आश्रम के, नाम से आज पुकारी जाती है।
तप वहाँ वशिष्ठजी करते थे, यह बात बताई जाती है॥
उस जगह गुफा एक भारी थी, और शेर वहाँ इक रहता था।
उसके ऊपर ही एक गुफा में, भारी अजगर बसता था॥
वह गुफ़ा अजब कुछ ऐसी थी, वन-पशु भी वहाँ आ जाते थे।
और इन्द्रदेव भी हो प्रसन्न, अपना पानी पहुँचाते थे॥
दोहा—इतनी दुर्गम जगह थी, जो वर्णन में नहीं आय।
पर स्वामी श्रीराम को, गई बहुत मन भाय॥

उसको साफ़ करायकर, ठहरे राम सुजान।
एकांतवास कर प्रभू ने, किया ईश्वर का ध्यान॥

स्वामीजी अब वहाँ रहते थे, वेदाध्ययन भी करते थे।
और कभी-कभी तो मृगराज, दर्शनों को वहाँ आ जाते थे॥
इस बीच में ही उस जगह पै एक, घटना अदभुत घटित हुई।
श्रीमान् रामजी की तबियत, कुछ वहाँ पै ऐसी दुःखित हुई।
जो अन्न आप खाते थे वहाँ, उसको पचा नहीं पाते थे।
इससे शरीर रोगी रहता, और शिथिल पड़ते जाते थे।

दोहा—जब उस आश्रम मे हुए, बहुत आप बीमार।
तो फिर अपना कर दिया, केवल दुग्ध-अहार॥
इससे छुटकारा मिला, तभी रोग से जाय।
लेकिन पहले की तरह, सके न वह बल पाय॥

वार्ता—भोजन छोड़ देने से रामजी रोग-मुक्त तो हो गए, पर उनके स्वास्थ्य को ज़रा भी लाभ नहीं पहुँचा, तब आपने वहाँ कई स्थान भी परिवर्तन किए, लेकिन कुछ भी लाभ न हुआ। वाशिष्ठ आश्रम में पूर्णसिंह भी पं० जगतराम-सहित दर्शनार्थ पधारे और एक महीने वहाँ रहकर साश्रुलोचन लौट गए। इस स्थान की खाद्य-सामिग्री इतनी खराब थी कि जो इसे खाता था, वह बीमार हो जाता था। इस कारण पूर्णसिंह भी वहाँ बीमार हो गए थे। तब नारायण स्वामी को आपने अपने समीप बुलाया था।

इस बीच में श्रीपूर्णसिंह भी, स्वामी के दर्शन को आए।
एक मास आपके पास रहे, हर प्रकार मन में हर्षाए॥
बीमार पूर्णसिंह हुए वहाँ, तन पर छाई श्यामलताई।
इस कारण से नारायण को, स्वामी ने लीया बुलवाई॥
पर वहाँ का अन्न कुछ ऐसा था, जो नहीं किसी को भाता था।
जो जन उसको खा जाता था, वही बीमार हो जाता था॥

इस कारण से नारायण भी, आ करके वहाँ बीमार पड़े।
गुरु सेवा का तो ज़िक्र था क्या, ख़ुद आप भी बिस्तर पर लेटे॥
दोहा—जब सबका उस जगह पर, हुआ स्वास्थ्य ख़राब।
तब सबने मिल राम से, किया यह प्रस्ताव॥
नाथ यह जगह छोड़कर, टिकें और कहीं जाय।
स्वामीजी के हृदय में, गई बात यह भाय॥

वार्त्ता—जब स्वामीजी से नारायण स्वामी ने यह प्रार्थना की कि या तो आप यहाँ का अन्न बंद कर दें या किसी अन्य स्थान पर नीचे उतरकर वास करें, तब स्वामीजी ने नीचे उतरना तो स्वीकार कर लिया, पर अन्न बंद करना नहीं स्वीकार किया। ऑक्टोबर १९०६ में राम फिर टिहरी आए, और राजा के सिमलासू बाग़ीचे में २ सप्ताह तक ठहरे। आपका दिल फिर एकान्तवास को चाहा और आपने टिहरी से पाँच मील दूर भागीरथी गंगा के किनारे मालीदयोल ग्राम के लगभग एक मील के अंतर पर एक स्थान पसंद किया, और वहाँ पर अंतिम जीवन तक रहने का विचारकर एक कुटिया बनवाने के लिये उसका मान-चित्र स्वयं बनाया। जिसे महाराजा टिहरी ने अपने पी० डबल्यू० डी० डिपार्टमेन्ट के द्वारा बनवाना शुरु कर दिया। अतः अब राम ऊपरवाला स्थान छोड़ नीचे सिमलासु बाग़ीचे में रहने लगे।

दोहा—इस प्रकार सिमलासू में, ठहरे कृपा-निधान।
नारायणजी आपका, लाये कुल सामान॥

फिर स्वामीजी ने अपने समीप, नारायण को बैठाया है।
एकान्तवास करने के लिये, इनको स्थान बताया है॥
बोले मैं यहाँ पर रहता हूँ, तुम बमरोगी में वास करो।
वह गुफा तुम्हारे लायक़ है, उसमें एकान्त अभ्यास करो॥
पहले मैं भी था रहा वहीं, अब वह मैं तुम्हें बताता हूँ।
वेदान्त का खूब अभ्यास करो, यह मैं तुमको समझाता हूँ॥

दोहा—नारायण को राम ने, समझाया हर तौर।
चले साथ हर्षित हिये, बमरौगी की ओर॥

यहाँ से पाँच मील की दूरी पर, बमरौगी में थी एक गुफा।
पहले भी कुछ दिन ठहरे थे, श्रीराम के संग नारायण आ॥
बस वोही गुफा आज प्रभू ने, फिर से इनको बतलाई है।
एकान्तवास करने के लिये, अति उत्तम और सुखदाई है॥
नारायण को देते शिक्षा, उपदेश और प्रेम बताते थे।
कुछ दूर तलक पहुँचाने को, आप भी साथ में जाते थे॥
बोले नारायण अब देखो, मेरा शरीर तो जरजर है।
जीवन की तो परवाह है क्या, मरना तो एक दिन बरहक है॥
पर एक बात मैं कहता हूँ, इसको अब तुम ध्यान धरो।
एकान्त का ख़ूब अभ्यास करो, वेदान्त का ख़ूब प्रचार करो॥

दोहा—नारायण को राम ने, समझाकर हर बात।
अपने आशीर्वाद का, रक्खा सिर पर हात॥
बोले बस अब जाओ तुम, करो न सोच-विचार।
जो बतलाया है तुम्हें, वही करो सब कार॥
चले नारायणजी उधर, बमरौगी को धाय।
इधर रामजी भी गये, सिमलासू में आय॥
इसी तरह आनंद में, गये पाँच दिन बीत।
हर्षित मन रहते सदा, गुरू शिष्य पुनीत॥
अब आती है वह कथा, सुनना देकर कान।
जिसके कारण देश को, पहुँचा क्लेश महान॥

एक रोज़ नारायण के समीप, राजा का चपरासी आया।
स्वामीजी जल में डूब गये, उसने था ऐसा बतलाया॥
वह वचन नहीं था बाण था एक, जो सीने में जा पार हुआ।
नारायण मन में सोच करें, हे ईश्वर यह क्या कार हुआ॥

फिर ठहरे कुछ सोचा - समझा, और उसके साथ तुरंत धाये।
एक क्षण की क्षण में नारायण, टिहरी नग्र में हैं आये॥
जब स्वामी का कुछ हाल सुना, तो मन में वह दुःख पाये हैं।
दूसरं रोज़ वहाँ से चलकर, स्वामी की कुटिया पर आये हैं॥
जब कुटिया पर पहुँचे तो, देखा कि कुटिया सूनी है।
पूँछा भाई क्या कारण है, यह घटना अद्भुत कैसी है॥
तब रसोइया अधीर हुआ, नेत्रों में जल भर लाया है।
स्वामीजी की जल-समाधि का, कारण ऐसे बतलाया है॥

दोहा—बोला मैं और नाथजी, गये गंगा की ओर।
मैंने और महाराज ने, किया स्नान बहोर॥

मैं तो न्हाकर बाहर आया, स्वामीजी खड़े नहाते थे।
सब शरीर अपना मलते थे, डुबकी भी कभी लगाते थे॥
जल का बहाव था बहुत तेज, मैंने स्वामी को समझाया।
वह लौटे नहीं पिछाड़ी को, उनको न वचन मेरा भाया॥
बोले मैं तैरना जनता हूँ, जल से मैं नहीं भय खाता हूँ।
यदि मृत्यू ही जो आय गई, तो उससे भी नहिं डरता हूँ॥
इतने में पानी के रेले से, नीचे का पत्थर खिसक गया।
उसके हटते ही स्वामीजी का, पैर वहाँ से फिसल गया॥
बस फिर क्या था गंगा की लहरों में, स्वामीजी खेलते जाते थे।
अपने बल के अनुसार प्रभू, पानी को बहुत हटाते थे॥
मैं खड़ा - खड़ा यह देखता था, आवाज़ें बहुत लगाता था।
पर मैं किस से लेता सहाय, नहीं नज़र कोई भी आता था॥

दोहा—बहुत देर महाराज ने, किया भँवर से खेल।
आखिर को इस प्रश्न में, हुए रामजी फेल॥

बहुतेरी कोशिश करने पर, जब राम न बाहर आय सके।
तो ईश्वर का आह्वान किया, और ओ३म् का शब्द उचार उठे॥

बोले जब यह ही इच्छा है, तो राम भी बस अब राज़ी है।
और हाथ-पाँव को खींच लिया, बोले, कर जो तेरी मरज़ी है ॥
दोहा—अब स्वामीजी हो गये, निज स्वरूप में लीन।
गगा मा की गोद में, अपने को दे दीन ॥
जब नारायण ने स्वामी की, समाधि का ऐसे हाल सुना।
तो जो कुछ मनमें दुःख हुआ, वह नहीं वर्णन है हो सकता ॥
किसकी ज़बान में ताकत है, जो उस गाथा को गायेगा।
किसकी लेखनी में हिम्मत है, जो उनका हाल बतायेगा ॥
गाना—भारत के अद्वितीय रतन नैन के तारे।
हा! शोक जगत मान हुए जगत से न्यारे ॥
उन्निस सौ छः ईस्वी सत्रह था अक्टूबर।
भारत से रवाना हुए भारत के नामवर ॥
क्यों न रोये आज यह भारत तेरे लिये।
देशोन्नती के काम थे तूने बहुत किये ॥
अफसोस हमें छोड़ा यहाँ किसके सहारे।
हा! शोक जगत मान हुए जगत से न्यारे ॥
भारत के लिये आपने संकट बड़े सहे।
जापान और अमेरिका में आप थे गये ॥
वो काम थोड़ी उम्र में थे आपने किये।
जिसे देख सभी लोग ताज्जुब में रह गये ॥
हाय नारायण को अब छोड़ा किसके सहारे।
हा! शोक जगत मान हुए जगत से न्यारे ॥
दोहा—इतने में यह धुन उठी, हुआ यह उपसंहार।
स्वामी तीर्थरामजी, गये परलोक सिधार ॥
यह खबर नग्र में जब पहुँची, तो सन्नाटा छाय गया।
टिहरी के महाराजा ने, कुल कार्य बंद करवाय दिया ॥

वह स्वयं जब आये टिहरी में, सारा वृत्तान्त है सुन पाया।
तो मन में बड़े अधीर हुए, दुःख हृदय में है छया॥
फिर आठ रोज में स्वामी का, मृत शरीर ऊपर को आया।
तो समाधि में थे राम मग्न, था चेहरा भी कुछ मुसकाया॥
दोहा—इस प्रकार महाराज ने, छोड़ा भारत देश।
निज स्वरूप में लीन हो, गये राम निज देश॥
अब नारायण स्वामी का हाल, हम सज्जन तुम्हें सुनाते हैं।
लिखने को तो हम लिखते हैं. पर मन में अति दुःख पाते हैं॥
निज गुरु का यों वियोग लखकर, नारायण बहुत अधीर हुए।
पागलों की नाईं फिरते थे, मन में भौंचक्के बने हुए॥
वह सोचते थे हैं हुआ यह क्या, स्वामीजी कहाँ सिधाये हैं।
मुझको क्यों यहाँ पर छोड़ गये, जाने क्यों नाथ रिसाये हैं॥
दोहा—कभी हँसें रोवें कभी, रहे बहुत दुःख पाय।
मन की जो कुछ थी दशा, कही न सज्जन जाय॥

वार्ता—इस प्रकार ता० १७ ऑक्टोबर १९०६ ई० तदनुसार कार्तिक कृष्ण १५, दीपमालिका को मध्याह्न के समय स्वामी रामजी भृगु गंगा में स्नान करने गए और नीचे से पत्थर खिसक जाने से एक भँवर में फँसकर उनका शरीर उनकी परम प्यारी गंगा में सदा के लिये लीन हो गया। इसके बाद जो नारायण स्वामी के मन पर प्रभाव पड़ा, वह वर्णन के योग्य नहीं है। जो सज्जन उसे जानना चाहें, वह नारायण स्वामी द्वारा संशोधित वृहत् राम जीवनी को देखें।

दोहा—इस प्रकार श्रीराम का, जीवन हुआ समाप्त।
भारत में फैला तभी, भारी एक संताप॥
धन्य-धन्य है आपको, नारायण नर नाथ।
लक्ष्मी के भी शीश पर, है नारायण का हाथ॥

श्रीरामतीर्थ-पब्लिकेशन लीग के हिंदी-ग्रंथ

नं०	नाम पुस्तक	सा० सं०	वि० सं०
१.	श्रीरामतीर्थ-ग्रंथावली २८ भाग, पूरा सेट	१०)	१५)
	फुटकर भाग	॥)	॥।)
२.	उक्त ग्रंथावली की संशोधित आवृत्ति के पहले नौ भाग, तीन जिल्दों में। प्रति जिल्द ...	१)	१॥)
३.	दशादेश (राम बादशाह के १० हुक्मनामे) ...		१)
४.	राम-वर्षा, भाग १-२	१)	१॥)
५.	राम-पत्र (गुरुजी के नाम राम के पत्र) ...	१)	१॥)
६.	बृहत् राम-जीवनी उर्दू कुल्लियाते-राम जिल्द २ का अनुवाद, पृष्ठ ६७२	२॥)	३)
७.	संक्षिप्त राम-जीवनी, पृष्ठ ६४	।)	
८.	श्रीमद्भगवद्गीता, स्वामी राम के पट्ट शिष्य नारायण स्वामी-कृत व्याख्या दो जिल्दों में ...	४)	६)
	प्रति जिल्द	२)	३)
	आत्मदर्शी बाबा नगीनासिंह वेदी-कृत		
९.	वेदानुवचन, पृष्ठ लगभग ५७०	१॥)	२)
१०.	आत्मसाक्षात्कार की कसौटी, पृष्ठ १७२ ...	॥)	॥।)
११.	रिसाला अजायबुल इल्म, पृष्ठ १६० ...	॥)	॥।)

इनके अतिरिक्त अँगरेज़ी और उर्दू में अनेक ग्रंथ लीग ने प्रकाशित किए हैं, जिनका सूचीपत्र लीग से मँगाकर देखिए।

मैनेजर

श्रीरामतीर्थ-पब्लिकेशन लीग

नं० २५ मारवाड़ी गली, लखनऊ